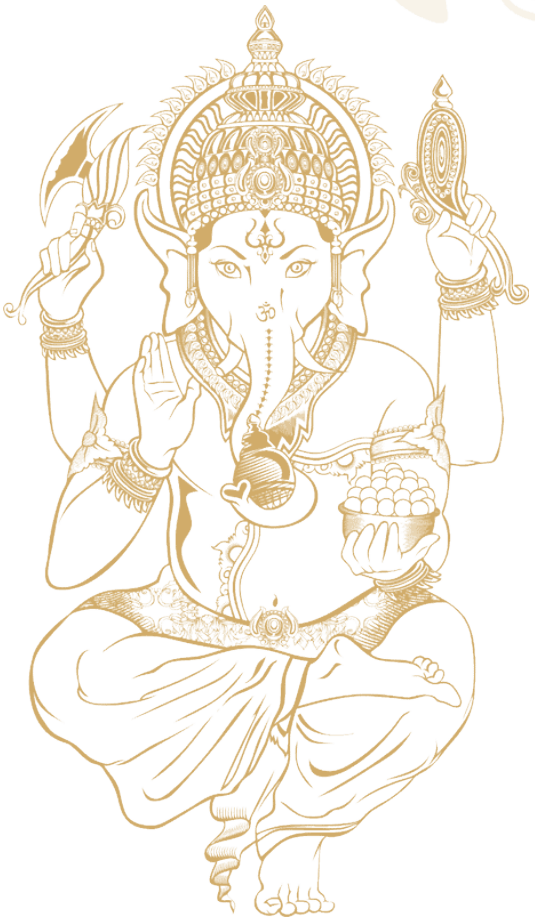

Akhil jain

Ritvika jain

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121405301

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121405301 Date: 26/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
22-23/01/1992	जन्म तिथि	07/07/1995
बुध-गुरुवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 02:00:00	जन्म समय	20:29:00 घंटे
घटी 46:49:03	जन्म समय(घटी)	37:06:06 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Ajmer
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	26:29:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	74:40:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:31:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:16:22	सूर्योदय	05:44:06
18:00:46	सूर्यास्त	19:27:57
23:45:04	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:49

तुला	लग्न	मकर
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	शनि
सिंह	राशि	तुला
सूर्य	राशि-स्वामी	शुक्र
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	स्वाति
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	राहु
2	चरण	3
शोभन	योग	सिद्ध
बव	करण	तैतिल
टा-टाटा	जन्म नामाक्षर	रो-रोहिणी
कुम्भ	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
क्षत्रिय	वर्ण	शूद्र
वनचर	वश्य	मानव
मूषक	योनि	महिष
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
श्वान	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 10वर्ष 1मा 12दि		24:26:20	तुला	लग्न	मक	08:11:14	राहु 7वर्ष 10मा 5दि	
राहु		08:19:26	मक	सूर्य	मिथु	21:14:29	शनि	
06/03/2025		19:55:15	सिंह	चंद्र	तुला	14:11:08	13/05/2019	
07/03/2043		16:16:48	धनु	मंगल	सिंह	28:15:48	13/05/2038	
राहु	17/11/2027	25:08:29	धनु	बुध	मिथु	01:24:32	शनि	16/05/2022
गुरु	12/04/2030	20:02:08	सिंह व	गुरु व	वृश्चि	12:45:12	बुध	23/01/2025
शनि	16/02/2033	03:15:07	धनु	शुक्र	मिथु	09:04:28	केतु	04/03/2026
बुध	05/09/2035	14:38:33	मक	शनि व	मीन	00:57:13	शुक्र	04/05/2029
केतु	23/09/2036	15:56:55	धनु व	राहु व	तुला	08:57:10	सूर्य	16/04/2030
शुक्र	24/09/2039	15:56:55	मिथु व	केतु व	मेष	08:57:10	चन्द्र	15/11/2031
सूर्य	17/08/2040	21:13:23	धनु	हर्ष व	मक	05:15:21	मंगल	24/12/2032
चन्द्र	16/02/2042	23:17:19	धनु	नेप व	मक	00:37:23	राहु	31/10/2035
मंगल	07/03/2043	28:52:56	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	04:17:29	गुरु	13/05/2038

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:45:04 चित्रपक्षीय अयनांश 23:47:49

लग्न-चलित

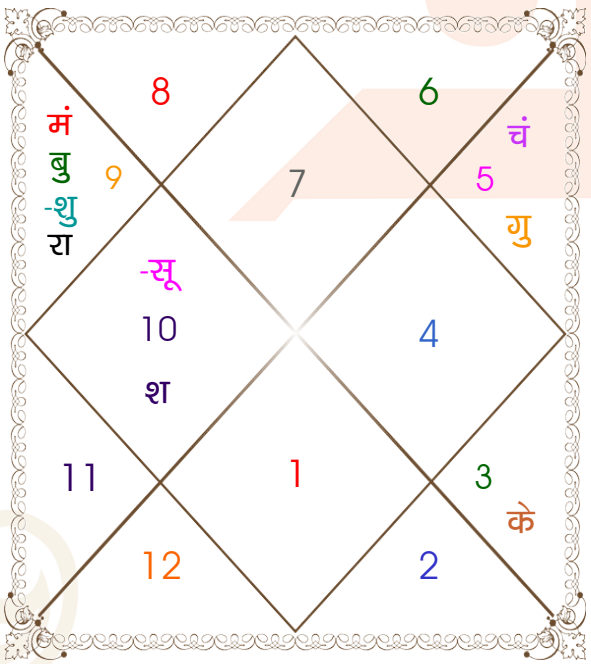

लग्न-चलित

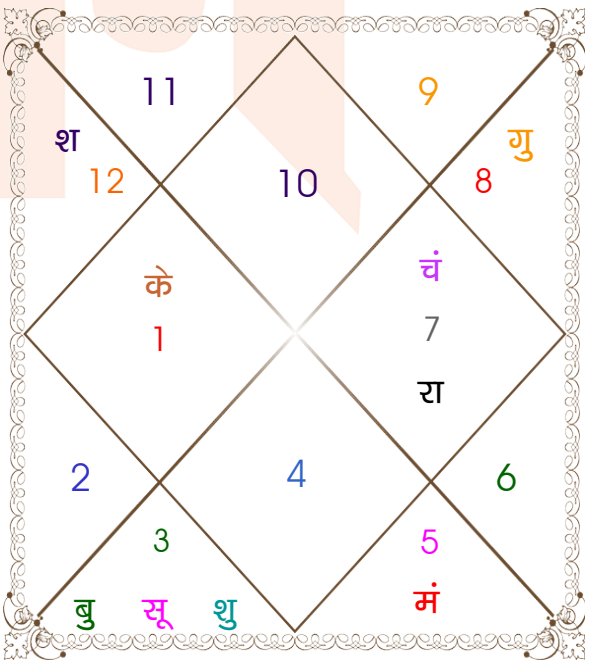

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	मानव	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मूषक	महिष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	शुक्र	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

कुल : **24.5 / 36**

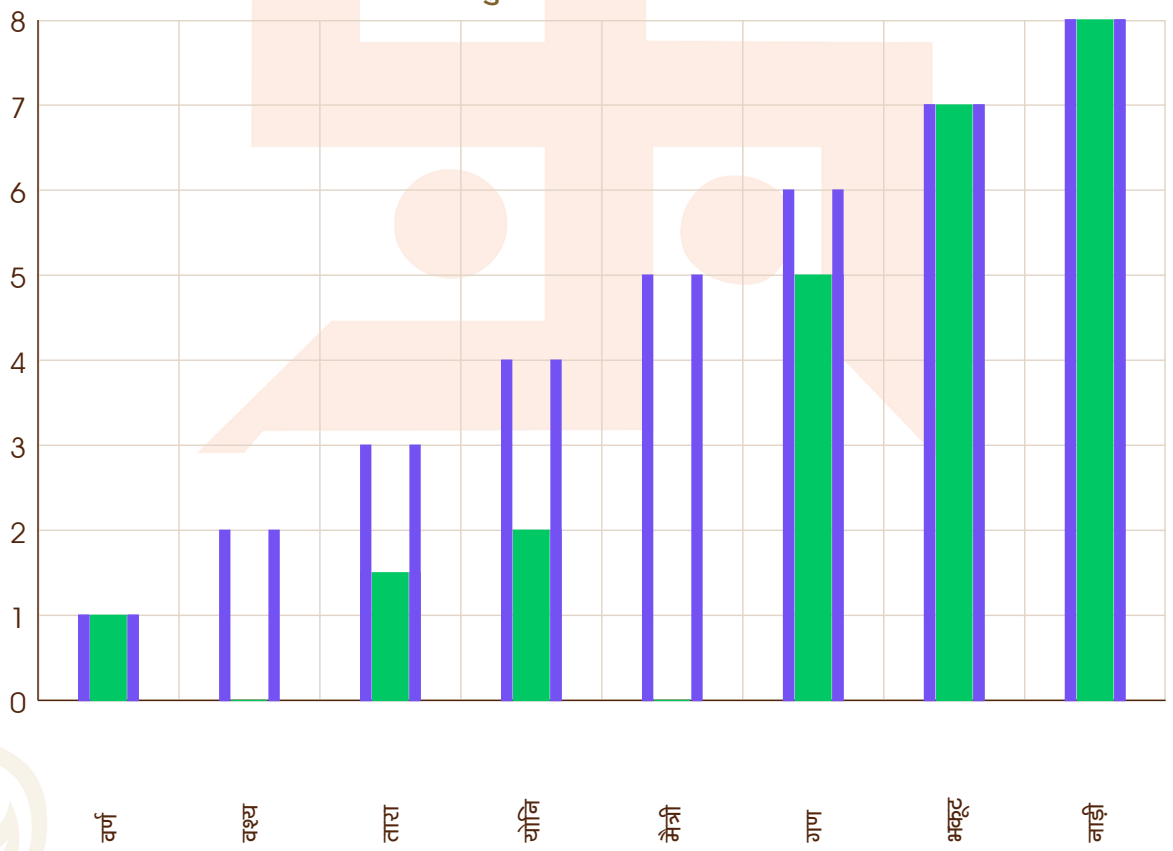

अष्टकूट मिलान

ाीपस रंपद का वर्ग श्वान है तथा Ritvika jain का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ाीपस रंपद और Ritvika jain का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

ाीपस रंपद मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

Ritvika jain मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ाीपस रंपद कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ाीपस रंपद तथा Ritvika jain में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ाीपस रंपद का वर्ण क्षत्रिय तथा Ritvika jain का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाव से Ritvika jain वैश्विक मां की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा सभी की देखभाल तथा सेवा बिना थके, बिना शिकायत किये करती रहेगी। साथ ही परिवार के किसी भी सदस्य अथवा ाीपस रंपद से कभी तर्क-वितर्क नहीं करेगी। अपने इसी आतिथ्य भाव के कारण सभी की प्रशंसा का पात्र बनेगी।

वश्य

ाीपस रंपद का वश्य वनचर है एवं Ritvika jain का वश्य द्विपद (मनुष्य) है। जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। वनचर मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु होता है तथा जब भी मौका मिलता है वनचर मनुष्य पर आक्रमण कर उसे मारकर खा जाता है। इसी प्रकार वैवाहिक संबंधों में भी दोनों एक-दूसरे के लिए शत्रु साबित होंगे। ाीपस रंपद और Ritvika jain के के बीच अक्सर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता रहेगा। दोनों समय समय पर एक दूसरे का अपमान करते रहेंगे। एक दूसरे की परवाह भी कम ही करेंगे। दोनों अक्सर लड़ाई-झगड़ा, एक-दूसरे पर वार एवं अपमान करते रहेंगे। जिससे परिवार की सुख-शांति भंग हो सकती है। ऐसी स्थिति में संतान भी अति क्रोधी, असामाजिक एवं अमानवीय व्यवहार करने वाले हो सकती है।

तारा

ाीपस रंपद की तारा साधक तथा Ritvika jain की तारा प्रत्यरि है। Ritvika jain की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। संभाव है कि यह विवाह ाीपस रंपद एवं उसके परिवार के लिए हानिकारक साबित हो। Ritvika jain का स्वभाव बिल्कुल लापरवाह, स्वार्थी एवं असहयोग की भावना वाली हो सकती है तथा भविष्य मे अपने स्वार्थ की पूर्ति करने में ही लगी रह सकती है। साथ ही Ritvika jain के अवैध संबंध तक भी हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप पति, बच्चों एवं संपूर्ण परिवार को काफी कष्ट एवं पीड़ा का सामना कर पड़ सकता है। ाीपस रंपद अत्यधिक आध्यात्मिक हो सकता है तथा अपना अधिकांश समय आध्यात्मिक गतिविधियों में ही व्यतीत करता रहेगा।

योनि

ाीपस रंपद की योनि मूषक है तथा Ritvika jain की योनि महिष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से

देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ाीपस रंपद एवं Ritvika jain दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अत्यधिक बुरा मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि में यदि दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हों तो इसे अत्यधिक बुरा मिलान माना जाता है। जिसके कारण ाीपस रंपद एवं Ritvika jain के बीच किसी प्रकार का प्रेम नहीं रहेगा तथा दोनों में काफी वैचारिक भिन्नता, तनाव, झगड़ा, मुकदमेबाजी यहां तक कि तलाक आदि की स्थिति भी बन सकती है। परिवार में शांति एवं सौहार्दता के अनुपस्थित रहने के कारण घर में हमेशा पैसे का अभाव बना रह सकता है तथा अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी ाीपस रंपद दवं Ritvika jain को काफी संघर्ष करना पड़ सकता है। इनके बच्चे अयोग्य, बात नहीं सुनने वाले तथा जीवन में काफी हद तक असफल होते हैं।

गण

ाीपस रंपद का गण मनुष्य तथा Ritvika jain का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में Ritvika jain सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर ाीपस रंपद व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण ाीपस रंपद अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

ाीपस रंपद से Ritvika jain की राशि तृतीय भाव में स्थित है तथा Ritvika jain से ाीपस रंपद की राशि एकादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण ाीपस रंपद अति महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा अच्छा कमाने वाले होंगे। दूसरी ओर Ritvika jain सद्गुणी, परिश्रमी, सहयोगी एवं दयालु होंगी तथा अपने पति की हर क्षेत्र में हर संभव सहायता करेंगी। दोनों के बीच मधुर तालमेल, एक-दूसरे की अच्छी समझ होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों।

नाड़ी

ाीपस रंपद की नाड़ी मध्य है तथा Ritvika jain की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन आवश्यक है। जिसके कारण ाीपस रंपद एवं Ritvika jain के बीच साहचर्य, सुख एवं समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

।ीपस रंपद की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त सिंह तथा Ritvika jain की वायुतत्व युक्त तुला राशि है। नैसर्गिक रूप से अग्नि एवं वायुतत्व में समानता पाई जाती है। अतः ।ीपस रंपद और Ritvika jain के मध्य स्वाभाविक समानताएं रहेगी परन्तु समय समय पर मतभेद एवं विवाद भी उत्पन्न होंगे। अतः मिलान मध्यम रहेगा।

।ीपस रंपद की राशि का स्वामी सूर्य तथा Ritvika jain की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर शत्रुभाव में पड़ते है। अतः इसके प्रभाव से ।ीपस रंपद और Ritvika jain के मध्य परस्पर विरोध एवं वैमनस्य का भाव रहेगा। साथ ही परस्पर एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करेंगे तथा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे फलतः परस्पर संबधों में कटुता तथा तनाव रहेगा एवं एक दूसरे के प्रति सहयोग एवं सहानुभूति के भाव की भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त ।ीपस रंपद की तेजस्वी प्रवृति से भी यदा कदा अशांति उत्पन्न होगी।

।ीपस रंपद और Ritvika jain की राशि परस्पर तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शास्त्रानुसार शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा यत्नपूर्वक परस्पर सामंजस्य स्थापित करके एक दूसरे को सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए उद्यत रहेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति आकर्षण स्नेह एवं समर्पण के भाव में भी वृद्धि होगी। ।ीपस रंपद और Ritvika jain की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन में सफल रहेंगे।

।ीपस रंपद का वश्य वनचर तथा Ritvika jain का वश्य मानव है। वनचर एवं मानव में नैसर्गिक शत्रुता एवं विषमता विद्यमान रहती है अतः ।ीपस रंपद और Ritvika jain की अभिरूचियों में विषमता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं असमान रहेंगी फलतः दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में असमर्थ होंगे।

।ीपस रंपद का वर्ण क्षत्रिय तथा Ritvika jain का वर्ण शूद्र है। अतः ।ीपस रंपद पराक्रमी एवं साहसी कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगे। Ritvika jain की प्रवृति किसी भी कार्य को बिना किसी वरीयता के परिश्रम एवं ईमानदारी से सम्पन्न करेंगी । फलतः कार्य क्षेत्र में उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे ।

धन

।ीपस रंपद और Ritvika jain की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। ।ीपस रंपद और Ritvika jain की राशि तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उनकी आय में नित्य वृद्धि होगी जिससे अर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी। साथ ही मंगल का प्रभाव भी सम रहेगा।

अतः धनार्जन होता रहेगा।

Ritvika jain एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः उन्हें अचानक धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना होगी। यह लाटरी या सटटे या किसी अन्य माध्यम से हो सकता है। साथ ही पैतृक सम्पति या जायदाद भी उनको मिलेगी जिससे दम्पति धन एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

ाीपस रंपद की नाड़ी मध्य तथा Ritvika jain की नाड़ी अन्त्य है अतः अलग अलग नाड़ी होने के कारण इनके स्वास्थ्य पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्यतया स्वास्थ्य अनुकूल ही रहेगा परन्तु मंगल के प्रभाव से ाीपस रंपद का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा। इससे वह रक्त तथा पित संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगे एवं हृदय रोग से भी यदा कदा कष्ट की प्राप्ति होगी। साथ ही दाम्पत्य जीवन में संभोग शक्ति की अल्पता का भी आभास होगा जिससे जीवन में कलह तथा अशांति उत्पन्न होगी। अतः मंगल के दुष्प्रभाव से सुरक्षित रहने के लिए ाीपस रंपद को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के व्रत भी करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ाीपस रंपद और Ritvika jain का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ाीपस रंपद और Ritvika jain के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Ritvika jain के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ritvika jain को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Ritvika jain को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ाीपस रंपद और Ritvika jain सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ाीपस रंपद और Ritvika jain का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ritvika jain के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि Ritvika jain धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से Ritvika jain के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी Ritvika jain का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी Ritvika jain से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

ाीपस रंपद के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को ाीपस रंपद अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी ाीपस रंपद के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण ाीपस रंपद के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।